Volume VIII, 2015 J. K. TIMES ISSN:2278-4047
A Multidisciplinary International Journal

लोकसाहित्य–लोक संस्कृति : परम्परा और प्रयोग

अनिल कुमार सिंह 'सेंगर'

Department of Hindi, J. K. College, Purulia- 723101, West Bengal
Correspondence: Mob-+919832277110

मर्मवाणी :
कसी भी देश की सभ्यता एवं संस्कृति, धर्म, रीति–रिवाज, कला साहित्य एवं सामाजिक आकांक्षाओं का सूक्ष्म चित्रण लो–साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। श्रेष्ठ साहित्य का स्त्रोत भी यही लोकाभियक्ति है और शिष्ट साहित्य के विकास की मूल भी लोकमानस की भावभूमि से ही तत्व ग्रहण करती रहती है। लोक साहित्य में बहुसंख्यक वर्ग का उल्लास और उच्छवास निहित रहता है। इसके निर्माण में पूरे समाज का दायित्व होता है, अतः इसका झुकाव भी बहुसंख्यक वर्ग की ओर ज्यादा रहता है। लोक साहित्य अधिक अलिखित तथा इस साहित्य के रचनाकार का नाम अज्ञात होता है। लोक का जीव प्राणी जो कुछ कहता–सुनता है, रचनाकार समूह की वाणी बनाकर और समूह में घुला–मिलाकर प्रस्तुत करता है। लोक साहित्य में लोक संस्कृति का वास्तविक प्रतिबिम्ब होता है। साधारण जनता का हँसना, गाना, खेलना, रोना आदि जिन–जिन शब्दों में अभिव्यक्त हो सकता है वह लोक साहित्य के अन्तर्गत ही आता है।

मुख्य शब्दावली– लोक, लोक साहित्य, लोक परम्परा, लोक गीत, लोक संस्कृति।

भूमिका

सामान्यतः 'लोक' शब्द संस्कृत के 'लोक दर्शने' धातु से 'धञ' प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। इस धातु का अर्थ देखना है। जिसका लट् लकार के अन्य पुरूष के एक वचन का रूप 'लोकते' है। अतः लोक शब्द का अर्थ हुआ–देखने वाला। इसे दूसरे शब्दों में इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं–वह समस्त जन–समुदाय जो इस कार्य को करता है उसे 'लोक' कहा जा सकता है।

'लोक' शब्द अत्यन्त प्राचीन है। वेदों में भी इसका उल्लेख मिलता है। इस वेद में लोक शब्द के लिए 'जन' शब्द का भी प्रयोग किया गया है।[1] वैदिक ऋषि का कहना है कि विश्वामित्र के द्वारा उच्चारित ब्रह्म मंत्र भारत 'जन' की रक्षा करता है –"य इमे रोदसी उभे ; अहभिन्द्रमतुष्टवम्।
विश्वामित्रस्य रक्षति ; ब्रह्मेदं भारतंजनम्।।"[2]

महर्षि पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में 'लोक' तथा 'सर्वलोक' शब्दों का उल्लेख किया है तथा इनसे ठञ् प्रत्यय करने पर 'लौकिक' तथा 'सार्वलौकिक' शब्दों की निष्पति की है।"[3] पाणिनि ने वेद से अलत 'लोक' शब्द को सत्ता को स्वीकार किया है। उन्होंने अनेक शब्दों की व्युत्पति बतलाते हुए लिखा है कि वेद में अमुक शब्द का अमुक प्रकार है परन्तु लोक में इसका स्वरूप भिन्न है।"[4]

महर्षि व्यास ने महाभारत विशेषताओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि यह ग्रन्थ अन्धकार रूपी अज्ञान से व्यथित लोक (सामान्य जनता) की आँखों को ज्ञान रूपी अंजना की शलाका लगाकर खोलने वाला है –"अज्ञान तिमिरान्धस्य ;
लोकास्य तु विचेष्टतः।
ज्ञानाञ्जन शलाकाभिः
नेत्रोन्मीलन कारकम्।।"[5]

श्रीमद्भागवत् गीता में 'लोक' और 'लोक संग्रह' शब्दों का प्रयोग अनेक स्थानों पर हुआ है। 'लोक' शब्द का प्रयोग यहाँ साधारण जनता के लिए है –"कर्मणैवहिसंसिद्धि पास्थिता जनकादयः
लोक संग्रह में वपि संपश्यनकर्तुर्हसि।।"[6]

महाकवि तुलसीदास ने भी 'रामचरितमानस' में 'लोक' और 'वेद' शब्दों का प्रयोग कर समाज में इनकी पृथक सत्ता को स्वीकृति दी है –"लोकहूं वेद विदित सब काहु
लोकहिं वेद सुसाहिब रीति।"[7]